वर्ष 18 अंक 01
27 जनवरी 2020
एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367
पोस्ट दिनांक 30 जनवरी 2020

ओ३म्

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल 32/2018-20
पृष्ठ संख्या 28
एक प्रति 20.00 रु.

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

※ एक दृष्टि में आर्य समाज ※

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

ओ३म्

वैदिक रवि मासिक

वर्ष 18 अंक–01

27 जनवरी 2020

(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)

सृष्टि सम्बत् 1,96,08,53,119

विक्रम संवत् 2077

दयानन्दाब्द 194

सलाहकार मण्डल

राजेन्द्र व्यास

पं. रामलाल शास्त्री 'विद्याभास्कर'

डॉ. रामलाल प्रजापति

वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक

श्री इन्द्रप्रकाश गाँधी

कार्या. फोन : 0755–4220549

सम्पादक

प्रकाश आर्य

फोन : 07324–226566

सह सम्पादक

श्रीमती डॉ. राकेश शर्मा

सदस्यता

एक प्रति – 20,00 रू.

वार्षिक – 200,00 रू.

आजीवन – 1000,00 रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ 2 एवं 3 .... 500 रू.

पूर्ण पृष्ठ (अन्दर) .... 400 रू.

आधा पृष्ठ (अन्दर का) .... 250 रू.

चौथाई पृष्ठ .... 150 रू.

अनुक्रमणिका

संपादकीय – बचालो अपने देश को 02

कविता – देश की पुकार 05

बोधकथा – सिर्फ भाग्य भरोसे नहीं 06

क्यों है आदमी परेशान 08

महर्षि दयानन्द का दृष्टिकोण... 10

कविता – ओ३म् जपो 11

भाई परमानन्द 12

मन, चिंतन और स्वाध्याय ... 14

समाचार 16

सम्पादकीय :

बचालो अपने देश को

भगवान राम और कृष्ण की पहचान दिलाने वाला विश्वगुरू सोने की चिड़िया कहलाने वाला यह देश संसार के सर्वोच्च स्थान पर अपनी पहचान बनाने वाला देश हमारे स्वर्णिम इतिहास की गाथाओं में आर्यावर्त के नाम से पहचाना जाता था। कालान्तर में परिवर्तन का दौर आया और भारतवर्ष का हिन्दोस्तान और इण्डिया के नाम से नामकरण होता रहा।

इतिहास के पन्नों में विश्व में किसी अन्य देश के साथ यह इतना परिवर्तन नहीं दिखाई देता।

देश की सुरक्षा उसकी प्रगति, उसकी खुशहाली इसको पहचान दिलाती है। सनातन संस्कृति का उद्गम स्थान भगवान मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम और योगीराज श्रीकृष्ण की जन्मस्थली से गौरवान्वित यह आर्यावर्त (भारतवर्ष) आज कहाँ है यह किसी से छिपा नहीं है।

सनातन धर्म का अनुयायी यह देश जहाँ प्रतिदिन संध्या में, प्रार्थना में स्वतन्त्र रहने की प्रार्थना करता है वह वर्षों परतन्त्र रहा। अखण्ड राष्ट्र की घोषणा करने वाले देश के अनेक टुकड़े होते गये। साथ चलने, एक विचार में रहने का गान करने वाला देश आज जाति, भाषा, प्रदेश, सम्प्रदाय, निर्धन–अमीर, ऊँच–नींच के जाल में उलझते जा रहा है।

गौरवमयी इतिहास पर छा रही कलंक की बदली ने अस्तित्व को आच्छादित करना प्रारंभ कर दिया। इसको और तेज गति मिली महाभारत काल के पश्चात एक भाषा, एक धर्म, एक ईश्वर के स्थान पर धर्म के नाम पर बढ़ता दायरा। इन सबके कारण इस देश और पवित्र सनातन संस्कृति पर प्रहार होते रहे। आपस की दूरियों ने आक्रान्ताओं को पूरी मदद कर जयचन्दी विचारधारा ने विनाश रूपी वृक्ष को सींचने में अपनी नींचता की पराकाष्ठा प्रदर्शित की, जातिवाद का झूठा अहम दीमक की तरह सनातन धर्म और राष्ट्रीयता को चाटने लगा।

ये देश कभी ना हारा है तीरों से, तलवारों से।
हानि उठाना पड़ी सदा, घर की दिवारों से।।

इन सबका दुष्परिणाम इस देवतुल्य भूमि पर, उसकी संस्कृति, उसकी महानता पर, उसकी वैभवता (धन) पर देखा जा रहा है।

स्वार्थ में लिप्त सनातनधर्मी स्वार्थ और भौतिक इच्छाओं का गुलाब बन गया, समाज, राष्ट्र, संस्कृति से उसको कोई गहरा नाता नहीं रहा।

दूसरी ओर सम्प्रदायों ने इस कमजोरी का भरपूर लाभ उठाया। हमने जातिवाद की काल्पनिक और थोथी मान्यता को महत्व देते हुए अपने ही हिस्से को अपने से दूर कर दिया और दूसरों ने उन्हें अपना लिया। इस प्रकार साम्प्रदायिक विचारों को हमने हमारी गलतियों, अन्धविश्वास, अज्ञानता के कारण उनके विस्तार में अहम भूमिका निभाई। जो देश या समाज अपने संकटमय इतिहास को भूल जाता है वह उन्हीं बुरे दिनों को स्वयं निमन्त्रण देता है।

आज इस देश को आन्तरिक और बाहरी खतरों की समस्याओं से जूझना पड़ रहा है। बाहरी दुश्मनों से निपटलेना आसान है। किन्तु आस्तीन के सांपों और सांपों को दूध पिलाने वालों की संख्या कम नहीं है जो देश की अस्मिता को खतरा पहुंचा रहे हैं। उनसे अधिक क्षति हो रही है।

धार्मिक स्वतन्त्रता व्यक्ति किसी के लिए उसका संवैधानिक मूलभूत अधिकार है। परन्तु धार्मिक स्वतन्त्रता को साम्प्रदासिक स्वतन्त्रता का स्वरूप देना समाज व राष्ट्र के लिए खतरा है।

आज साम्प्रदायिकता का कलंक इस देश को कितना नुकसान पहुंचा रहा है, इससे समाज अभी भी पूर्णतः परिचित नहीं है। ऐसा भी नहीं है कि इस विचारधारा ने पहले कभी ऐसा दुष्कृत्य देश या समाज के लिए नहीं किया हो। इतिहास के काले दिनों को भूलना भुलाना अज्ञानता के साथ–साथ मूर्खता भी होगी।

"जिसे खुद न होश अपने संभलने का।

खुदा भी उस कौम की हिफाजत नहीं करता।।"

इस देश के विभाजन की नींव किसी राजनैतिक कारण से नहीं अपितु साम्प्रदायिक विचारधारा का ही परिणाम रहा है। केवल वर्तमान दशक की मत सोचों, ईराक, ईरान, इजिप्त, इन्डोनेशिया, अफगानिस्तान, पाक़िस्तान व बांग्लादेश इसी के परिणाम हैं जहाँ पहले सनातन विचारधारा का साम्राज्य रहा।

सम्प्रदाय का उद्देश्य अपनी संख्या बढ़ाकर जिसमें लूटमार, बलात्कार, हिन्सा, लालच, षड़यन्त्रों से धर्म परिवर्तन करना अपने यहॉ बड़ी संख्या में परिवार वृद्धि करना होता है।

एक ओर धर्म घारायण सनातन धर्मी जिसका धर्म अहिंसा, परोपकार, पवित्रता से अच्छे मानव का निर्माण करना है वे बड़ी संख्या में होते हुए भी किसी दूसरी विचारधारा को नुकसान नहीं पहुंचाते। किन्तु साम्प्रदायिक विचारधारा में इसके ठीक विपरीत है। वे अपनी संख्या बढ़ाकर सियासत अपने हाथ में लेना चाहते हैं।

एक निश्चित मात्रा में संख्या बढ़ने पर अपनी विचारधारा से अलग व्यक्तियों पर कई जगह अमानवीय जुल्म ढाये गए। 1947 में बंटवारे के समय खून व शवों से भरी पाकिस्तान से आती ट्रेनों में माता बहिनों की लूटी अस्मिता बच्चों की निर्मम हत्या घरों में बन्दकर आगजनी ये दृश्य उन चन्द जिन्दा बच्चे बुजुर्गों से जो अपना सबकुछ धन, सम्पत्ती, परिवार छोड़कर जान बचाकर, भगाकर आए उनसे पूछो। 72 वर्षों का वह भयानक दृश्य आज भी उनकी ऑखें नम कर देता है।

कश्मीर पलायन कश्मीर मूल के अनेक व्यक्तियों से पूछो जिनके परिवार व मकानों को साम्प्रदायिक जुनुन ने नष्ट किया, केरल, कैरेना, मेवात, न जाने कितने क्षेत्र जहॉ बढ़ती आबादी से सनातन धर्मी पलायन करने को मजबूर हो रहे हैं।

दूसरी ओर देश का नागरिक इस साम्पदायिक और दूषित, स्वार्थ में लिप्त राजनीति के मिलेजुले षड़यन्त्र से बेखबर अपना परिवार, अपनी सम्पत्ती, अपना पद बढ़ाने में व्यस्त है। भूल रहा है कि पहले भी परिवार, बड़ी–बड़ी इमारतें, सम्पत्ती को जबरन छीन लिया गया। दुर्भाग्य है हम इस बेजवबदारी के व्यवहार से देश व संस्कृति को संभावित खतरे से बचाने में कोई न तो चिन्ता रखते हैं न प्रयास।

हम उलझे हुए है निज स्वार्थ में, अपने दल के लिए भाजपा, कांग्रेस, बसपा, सपा, की प्रतिष्ठा बढ़ाने में। राष्ट्रहित नहीं व्यक्ति व पार्टी सर्वोपरि हो रही है। यह विड़म्बना है –

राष्ट्र प्राणों से बड़ा होता है।
हम मिटते हैं तब राष्ट्र खड़ा होता है।।

इस भावना की आज आवश्यकता है, यही भारतवर्ष की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इस भावना से ही देश बचेगा। **जयहिन्द.**

जिस भूमि पर हमारा जन्म हुआ, जिसकी धूल में खेलकर बड़े हुए उसकी हवा, पानी, अन्न से जीवन पोषित हुआ, हमारा कर्तव्य है, उस मातृभूमि की रक्षा करें, उसकी उन्नति में सहयोगी बनें।

– महर्षि दयानन्द

देश की पुकार

देश पुकार रहा, अब नीन्द को त्यागो।
जाग जाओ और सबको भी जगाओ।।
निन्द्रावस्था में विधर्मी लूट रहे सम्पदा।
संस्कृति सुरक्षा पर आ रही बड़ी आपदा।।
तुले है ये नष्ट–भ्रष्ट करने भारत की आत्मा।
गर न चेते समय रहते, तो न बचा सकेगा परमात्मा।।
खतरा मण्डरा रहा, राम–कृष्ण के आदर्शों पर।
बाहरी संस्कृति फैलायी जा रही षड़यन्त्र कर।।
कब तक सत्ता की भूख में, देश को भूलोगे।
राजनीति के कारण, विघटन मार्ग पर चलोगे।।
सबकुछ कुर्सी को समझने वाले, देश अस्मिता नीलाम कर रहे।
उनके ही आश्रय से, संस्कृति भक्षक आज पल रहे।।
ये राजनेता जिनके दिल दिमाग, सत्ता के आस–पास हैं।
इन्हें कुछ लेना–देना नहीं सिर्फ स्वार्थ में विश्वास है।।
बेच देगें संस्कृति तुम्हारी, कुर्सी के नाम पर।
बन्धक बन जाओगे, अपने घर में रहकर।।
ईमान – धरम इनके लिए व्यर्थ है।
केवल कुर्सी में दिखता सब अर्थ है।।
ये मजहबी शातिर चालाक चतुर है।
इंसानियत की राह से दूर है।।
कुछ समय का कर रहे ये इन्तजार।
संख्या बल होते ही करेंगे ये प्रहार।।
बातों में व्यवहारों में नकली चेहरा छिपा रहे।
दलितों या गरीबों के रहनुमा बता रहे।।
ये भोला सनातनी कुर्सी का गुलाम बना है।
अपने को फिर से गर्दिशों में लाने को तुला है।।
इसलिए जागो, जगादो, सारे देश को।
बेनकाब कर दो, बहरूपियों के भेष को।।

– प्रकाश आर्य, महू

सिर्फ भाग्य भरोसे नहीं

"आंधी तूफान में ईश्वर से प्रार्थना तो करो, किन्तु अपनी पतवार लगातार चलाते रहो।

– यूरोपीय कहावत

एक नदी का बाँध टूट जाने के कारण उसका पानी पास के गोव में पहुँचने लगा। पानी पहुंचने से गांव में चारों ओर हाहाकार मच गया। सभी लोग अपनी जान बचाने के लिए गांव से बाहर भागने लगे।

उसी गांव के बाहर भगवान का एक मन्दिर था। जिसमें उस वक्त तीन ब्राह्मण पूजा कर रहे थे। गांव के कई आदमी उनके पास पहुंचे और बोले – पण्डित जी। गॉव में नदी का पानी शीघ्रता से आ रहा है, आप तीनों जल्दी से इस मन्दिर से निकलो और हमारे साथ बाहर निकल कर यहां से दूर चलिए।

इस पर उन पण्डितों ने कहा – अरे, हम लोग भगवान के भक्त हैं, तुम लोग अपनी चिन्ता करो, हम लोगों को भगवान बचाने आयेगें, क्योंकि भगवान पर हम तीनों का बहुत भरोसा है। कई आदमियों ने उन पण्डितों को समझाने की कोशिश की, तो उन तीनों ने उन्हें फटकार कर वहां से भगा दिया। कुछ ही देर बाद जल का स्तर बढ़ने से पानी मन्दिर के अन्दर आने लगा। तब वे तीनों पण्डित उस मन्दिर की छत पर जा बैठे।

अब तक सूचना मिलने से तमाम राहतकर्मी मोटर बोटों से आ पहुँचे तथा जो लोग उस वक्त तक किसी कारण से भाग नहीं सके थे और अपने–अपने घरों की छतों पर बैठे थे, उनको मोटर बोट के जरिए बाहर ले जाने लगे।

तभी एक मोटर बोट के राहतकर्मी की नजर मन्दिर की छत पर बैठे उन पण्डितों पर पड़ी। उस राहतकर्मी ने अपनी मोटर बोट उस मन्दिर के समीप ले जाकर रोक दी फिर उन तीनों को मोटर बोट में बैठने का निर्देश दिया। किन्तु उन तीनों ने उस मोटर बोट में बैठने से साफ इन्कार कर दिया और बोले – तुम अपनी मोटर बोट यहां से ले जाओ, तुम्हारे पीछे ही हमारे भगवान अपने जलयान से स्वयं आयेगें और हमें बचा लेगें। भगवान पर हमें पूरा भरोसा है।

धीरे–धीरे पानी का स्तर बढ़ रहा था। कुछ ही देर में उन तीनों का छत पर रहना मुश्किल हो गया था, क्योंकि पानी उस छत के उपर पहुँचने लगा था। इसलिए वे तीनों पण्डित मन्दिर की चोटी पर चढ़ गये।

तभी बचाव कार्य में लगे एक हेलिकाप्टर के पाइलेट की नजर में वो तीनों दिखे। उसने हेलिकाप्टर को उन पण्डितों के सामने रोका और कहा – हरी अप!

आप तीनों जल्दी से हेलिकाप्टर की इस सीढ़ी द्वारा अन्दर आ जाईये। पर वे तीनों नहीं माने और बोले, तुम यहां से निकलो ! तुम्हारे पीछे ही अभी हमारे भगवान अपने यान से आयेगें और हम तीनों को बचा लेगें, क्योंकि हम तीनों को उन पर पूरा भरोसा है।

थोड़ी देर बाद पानी उस चोटी के उपर निकल गया और वो तीनों पण्डित उस जल में डूबकर मर गये। मरकर जब वे भगवान के पास पहुंचे तो तीनों गुस्से से लाल–पीले हो गये।

भगवान ने पूछा कि – तुम तीनों मेरे पे इतना लाल–पीले क्यों होते हो ? इस पर उन पण्डितों ने कहा – भगवान ! लाल–पीले होने की बात ही है, आप पर कितना भारी विश्वास था। आपने हम लोगों के साथ घोर विश्वासघात किया है। आगे से आप पर पृथ्वीवासी विश्वास करना बन्द कर देगें।

भगवान ने बड़े ध्यान से उनकी बातों को सुना फिर अपनी गम्भीर आवाज में बोले – अरे मूर्खों। तुम्हारे गांव के कई व्यक्तियों, राहतकर्मियों और पाइलेटों को किसने भेजा था ? जब तुम मेरे बनाए इन्सान का विश्वास नहीं करते तो इसमें मेरा भला क्या होगा ? यदि तुम तीनों बुद्धि प्रयोग करके मेरी भेजी सहायता को पहचानते तो इस समय जीवन का आनन्द ले रहे होते। याद रखो भगवान स्वयं कोई कार्य नहीं करते वह अपने भक्तों का कार्य करवाने के लिए साधन भेजते हैं। कार्य तो इन्सान को स्वयं ही करना होगा।

"भगवान या भाग्य उन्हीं की मदद करता है, जो अपनी मदद स्वयं करते हैं।"

अभिमान से दूरी

यदा किंचिज्ज्ञोऽहं द्विप इव मदान्धः समभवम्
तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः।
यदा किंचित्किचिंद् बुधजनसकाशादवगतम्
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः।।

भावार्थ – जब मुझे कुछ ज्ञान हुआ तो मैं हाथी के समान मदान्ध होकर अपने मन में ज्ञानी होने का गर्व करने लगा और समझने लगा कि मैं सर्वज्ञ हूँ। मेरे जैसा कोई नहीं, लेकिन जब मैं विद्व समाज से, ज्ञानी जनों से, सद् संगति से कुछ–कुछ प्राप्त कर सका या जब मुझे यथार्थ का ज्ञान हुआ, तब मेरा वह मद ज्वर के समान उतर गया और मैंने जाना कि मैं तो निपट मूर्ख हूँ।

क्यों है आदमी परेशान!

सुबह से रात्री तक हम अनेक व्यक्तियों से मिलते है, और उससे भी बहुत अधिक संख्या में उन्हें देखते हैं। इस भीड़ में बहुत कम ऐसे मिलेगें जिनके चेहरो पर प्रसन्नता दिखाई दे। अन्यथा प्रायः तनाव, चिन्ता, क्रोध, परेशानी, यही सब चेहरों पर देखने को मिलती है।

ये परेशानियां जीवन का सुख चैन छीन लेती है जीवन उबाऊ हो जाता है वक्त कटते नहीं कटता है कुछ के लिए तो यह अभिशाप भी बन जाती है। परन्तु यह तो जीवन को जीने का सही तरीका नहीं है। क्योंकि जिस जीवन में सुख, शान्ति, उमंग, उत्साह होता है वही अच्छा जीवन कहलाता है।

परेशानी के कारणों में मुख्यतः हमने जीवन के भौतिक मापदण्डों को चुना, अपने लिए इनका अभाव पैसा, परिवार, पद, प्रतिष्ठा, स्वास्थ आदि को माना। इन्ही अभाव को दुःख व परेशानियों का कारण मान दुःख, परेशानी की जड़ समझ रहे हैं। किन्तु ऐसा नहीं है, जिनके पास बहुत धन, सम्पत्ती है जिनके अपने अरबों के व्यापार हैं वे भी दुःखी है, चिन्ताओं से घिरे है, अनिन्द्रा, शकर, हृदय की बिमारियों के प्रकोप से नारकीय जीवन जी रहे हैं, उनके सामने भी पारीवारिक समस्याएं हैं, धन सुरक्षा का भय है, शासकीय विभागों का चक्कर है इस प्रकार न जाने कितनी समस्याओं ने जीवन को बुरी तरह प्रभावित कर रखा है। इसलिए धन दुःखों को हटा देगा, यह सोच ठीक नहीं अपितु अपार असंतुलित धन, अनुचित तरीकों से कमाया धन और परेशानियॉ बढ़ाता है। हमारे मानसिक विचार, सुख – दुःख के आधार हैं।

जिनके परिवार में अच्छी खासी संख्या है भाई बन्धु, पुत्र, पौत्र से भरापुरा परिवार है वे भी दुःखी हैं। जिनके पास प्रतिष्ठा है, पद है, वे भी दुःखी है। जिनका अच्छा स्वास्थ है, बिमारियों से दूर है वे भी परेषान नजर आते हैं। इसलिए इस परेशानी का अन्त मात्र धन, सम्पत्ति पद, पुत्र, पौत्र, परिवार में बसा है यह मानना युक्ति संगत नहीं है।

समझ लेना चाहिए इन परेशानियों का कारण केवल भौतिक अभाव नहीं है तो फिर वे क्या कारण है यह जानना जरूरी है। वैसे तो जिन कारणों से व्यक्ति परेशान रहता है उनकी कोई सीमा नहीं है। किन्तु यह निश्चित मानिए यहां उल्लेखित उन कुछ प्रमुख बातों को अपनाकर भी जीवन की परेषानियों को बहुत कुछ कम कर सकते हैं। आईए कुछ बातों पर विचार करते है।

दिल ही बदौलत रंज भी है,
दिल ही की बदौलत राहत भी।
दुनिया जिसे कहते हैं,
वह जन्नत भी है दोजख भी।।

अधिकांश परेशानियों की जड़ हमारे अपने विचार हैं। ये हमारे विचार ही हमारे कार्यों को गति प्रदान करते हैं। विचारों के अनुसार कार्यों को करना या किसी कारणवश चाहते हुए भी न कर पाना एवं करने के पश्चात भी पर्याप्त वांछित परिणाम न प्राप्त होना परेशानियों को जन्म देता है। इसलिए विचार वही करना चाहिए जो हमारी योग्यता, क्षमता, समय, स्थिति के अनुसार हों। आचार्य यास्काचार्य ने मनुष्य को विचारशील होने का सन्देश देते हुए कहा –

"ये मत्वा कर्माणि सीव्यन्ति ते मनुष्याः" अर्थात् मनुष्य वे ही जो प्रत्येक कार्य को विचार करके करते हैं। यहां विचार से तात्पर्य यथायोग्य होना चाहिए, उचित होना चाहिए, अपनी क्षमता, योग्यता समयानुकूल होना चाहिए।

विश्व प्रसिद्ध दार्शनिक, अर्थशास्त्री आचार्य चाणक्य ने परेशानियों से बचने का अमृततुल्य सूत्र हमें दिया। इसे ध्यान देकर समझें तो अनेक परेशानियों का कारण हमें इसमें मिल जावेगा। श्लोक इस प्रकार है :–

कः कालः कानि मित्राणि,
को देशः को व्ययागमौ।
कश्चाहं का च में शक्ति,
ऋतु ध्यायन मुहुर मुहुर।।

लोक में पहली बात है कः कालः – समय कौन–सा है, किस व्यक्ति को कौन सा कार्य कब करना, कब किसमें चिन्तन करना इसका ज्ञान नहीं होता, वही परेशान व दुःखी होता है। समय के महत्व, सीमा व मर्यादा को ध्यान में रखकर विचार करना, कार्य करना दुःख परेशानियों को दूर करता है।

कुछ व्यक्ति वर्तमान में नहीं जीते, उनकी सबसे बड़ी समस्या यह होती है कि जो कल बीत गया और जो कल आने वाला है उसको वे वर्तमान से अधिक महत्व देते हैं।

कल जो बीत गया उसमें जो होना था वह हो चुका, उसके परिणाम को अब हम बदल नहीं सकते, जो नुकसान हो गया उसकी भरपाई नहीं हो सकती, हमारे साथ जो दुर्घटना हो चुकी, जिसका फल हमें भोगना था वह भोग चुके। इन सबको केवल याद करके घटनाओं को ताजा बनाते हैं। इनके अतीत में इतने डूब जाते हैं और इस कारण कि वर्तमान का ध्यान ही नहीं रहता। बीते हुए कल के प्रभाव में जो वर्तमान हमारे हाथ में है

उसको नजर अन्दाज करके इसमें जो खुशियॉ ला सकते थे, उसके स्थान पर बीते हुए कल के परिणामों से ही चिन्तित रहते हैं।

इसी प्रकार जो कल आने वाला है उसके प्रति ही आशान्वित रहना, असुरक्षा भाव से उसी ओर पूरा ध्यान देकर उसके बारे में अनुमान की दुनियां में खोकर हम वर्तमान की उपेक्षा करते हैं। इससे वर्तमान की उपलब्धियों को छोड़कर जो प्राप्त है, उसे छोड़कर, आगे आने वाला है जिसकी अभी निश्चितता नहीं है उसे बहुत अधिक महत्व देना भी परेशानियों का कारण है।

इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि हम अतीत और भविष्य को बिलकुल अनदेखा कर दे। अतीत सीखने के लिए व भविष्य जीवन योजना के लिए जरूरी है किन्तु हमारे हाथ में जो हैं उसका महत्व कम करके और जो अब हमारे पास नहीं रहा या जो अभी आया नहीं है उसकी चिन्ता या खयाली पुलावों में उलझकर उसे विशेष महत्व देना परेशानियों का कारण है। इसलिए वर्तमान को संभालो, भविष्य स्वतः संभलेगा।

— प्रकाश आर्य, महू

महर्षि दयानन्द का दृष्टिकोण कितना सार्थक व उपयोगी

असत्य का त्याग — कभी सत्य बात के करने और झूठ बात के छोड़ने में भय न करें, किन्तु युक्तिपूर्वक इस बात को पूरी करें।

(ऋ. द. प. वि. भाग 2 पृ. 655)

असत्य का परिणाम — थोड़ा सा भी असत्य हो जाने से सम्पूर्ण निर्दोष कृत्य बिगड़ जाता है। ऐसा निश्चय रखो।

(ऋ. द. प. वि. भाग 2 पृ. 695)

असत्य मतों का खण्डन — जैसा मैं इस्लाम मत का खण्डन करता हूँ, ईसाई मत का खण्डन भी कदापि उससे कम नहीं करता। यहॉ तक कि मैं अपने हिन्दुओं की वर्तमान धार्मिक अवस्था पर भी सहमति प्रकट नहीं करता।

(ऋ. द. स. के पत्र और विज्ञापन प्र. भा. पृ. 185)

अस्पृश्यता और भेदभाव से देश की हानि — इसी मूढ़ता से इन लोगों ने चौका लगाते–लगाते विरोध करते–करते सब स्वातन्त्र्य, आनन्द, धन–राज्य विद्या और पुरूषार्थ पर चौका लगाकर हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं और इच्छा करते हैं कि कुछ पदार्थ मिले तो पकाकर खावें। परन्तु वैसा न होने पर जानो सब आर्यावर्त देशभर में चौका लगा के सर्वथा नष्ट कर दिया है।

(सत्यार्थ प्रकाश पृ. 250)

क्रमशः ....

ओ३म् जपो

ओ३म् जपो ओ मानव मन में भवसागर तर जाओगे,
परमेश्वर से प्रीति निभाओ जो चाहो कर पाओगे।

झूठा है संसार सकल यह ध्येय यही जो हो अपना,
परमेश्वर को पा जाने पर यह ही बन जाता सपना।
सबसे सद्व्यवहार करोगे स्नेह सुधा सरसाओगे।।
ओ३म् जपो ....

नन्हीं मानवता बाला को ऊँगली थमा चलाओ तुम,
दीन हीन, पिछड़े पतितों को देकर साथ निभाओ तुम।
जगतपिता की सकल सृष्टि में विश्वबन्ध बन जाओगे।।
ओ३म् जपो ....

सबमें है अनुराग चिरन्तन सारी सृष्टि वतन किसका,
तन किसका, यह धन किसका है, करे मनन यह मन किसका ?
जग के जीवन धन को जानो मुक्ति परम धन पाओगे।।
ओ३म् जपो ....

जब–जब जीवन ज्योति जले आलोकित कोना–कोना हो,
व्याकुल विश्व सुपथ पा जावे कभी न तम में खोना हो।
मंगलमय हो पल पल पावन जीवन पथ पर जाओगे।।
ओ३म् जपो ....

यज्ञ करो, जल वृष्टि करो शुभ सृष्टि करो जग जीवन में,
धर्म धरो शुभ कर्म करो वेदों का मर्म धरो मन में
ब्रह्म शान्ति सर्वम् शान्ति हो परम लक्ष्य प्रभु ध्याओगे।।
ओ३म् जपो ....

परमेश्वर से प्रीति निभाओ जो चाहो कर पाओगे।

– **रमेशचन्द्र चौहान**
इन्दौर

भाई परमानन्द

जिस समय अत्याचारी मुगल बादशाह औरंगजेब ने सिखों के नवें गुरू तेग बहादुर को निर्ममतापूर्वक दिल्ली में कत्ल करवाया था, उस समय उनके साथ पंजाब के एक ब्राह्मण मतिदास का शरीर आरे से चिरवाकर, उसे भी गुरू महाराज के साथ धर्म की वेदी पर बलिदान कर दिया था। जब दशम गुरू गोविन्दसिंह को इन बलिदानों के समाचार मिले, तब उन्होंने मतिदास के वंशजों को भाई कहकर पुकारा, क्योंकि गुरू तेग बहादुर के साथ एक सहोदर भाई की तरह मतिदास ने भी अपने प्राण न्यौछावर किये थे। तब से उस ब्राह्मण मतिदास के वंशज भाई के सम्बोधन से ही पुकारे जाने लगे। मुहियाल ब्राह्मणों के इसी पवित्र वंश में भाई परमानन्द का जन्म 1876 में हुआ। उनके पिता भाई ताराचन्द जेहलम जिले के कटियाला ग्राम के निवासी थे।

भाईजी की प्रारम्भिक शिक्षा अपने ग्राम में ही हुई। उसके बाद वे चकवाल के मिडिल स्कूल में भर्ती हुए। उनकी उच्च शिक्षा लाहौर में हुई। डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर से उन्होंने बी.ए. किया और कलकत्ता के प्रसीडेन्ट कॉलेज से इतिहास में एम. ए. किया।

भाई के जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आया, जब उन्हें पूर्वी अफ्रिका में आर्य धर्म के प्रचारार्थ भेजे जाने का प्रस्ताव आया। सम्भवतः वे आर्य समाज के प्रथम प्रचारक थे, जो अफ्रिका महाद्वीप में बसे प्रवासी भारतीयों के अनुरोध पर वहां गए। 1906 में उनका यह प्रथम विदेश–प्रवास हुआ। मोम्बासा, नैरोबी, जोहान्सबर्ग, नेटाल आदि स्थानों में धर्म–प्रचार करने के उपरान्त वे डर्बन पहुंचे। उन दिनों महात्मा गांधी बैरिस्टर के रूप में, अफ्रिका में प्रवासी भारतीयों का हितचिन्तन करते हुए, उनके नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे थे। भाईजी ने महात्माजी से भेंट की। उनके सेवा भाव तथा समर्पणशील व्यक्तित्व से वे अत्यन्त प्रभावित हुए। गांधीजी से उनका मैत्री–भाव जीवन–पर्यन्त रहा।

1908 में भाई परमानन्द स्वदेश लौट आए। पहले की भांति वे डी.ए.वी. कॉलेज तथा आर्य समाज के कार्यों में लग गए। 1909 में वे दक्षिण भारत में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ निकले। विभिन्न स्थानों पर जाकर सामाजिक जागृति का शंखनाद किया।

22 फरवरी 1925 को भाईजी को "लाहौर षड़यन्त्र अभियोग" में बन्दी बना लिया गया। अभियोग का निर्णय करने के लिए एक विशेष न्यायिक ट्रिब्यूनल का गठन किया गया, जिसके दो अंग्रेज तथा एक भारतीय सदस्य थे। अनुमान तो यह था कि भाईजी को फॉसी का दण्ड दिया जाएगा, किन्तु ट्रिब्यूनल के भारतीय सदस्य के आग्रह पर उन्हें अजन्म कारावास की सजा हुई। वे कालापानी भेज दिये गए। इस भीषण दण्ड को भोगते

हुए उन्हें कैसी–कैसी अमानुषिक यातानाएं झेलनी पड़ी इसका रोमांचक वर्णन स्वयं भाईजी ने अपनी आत्मकथा में किया है। महात्मा गांधी और भारत–भक्त एण्ड्रूज के प्रयत्नों से 1930 में उन्हें कालापानी से रिहा कर दिया गया। वर्षों बाद वे स्वदेश लौटे। उस समय देश में महात्मा गांधी द्वारा चलाए जाने वाले असहयोग आन्दोलन का जोर था। सरकारी स्कूलों और कॉलेजों का बहिष्कार किया जा रहा था। स्वदेशी भावना को प्रोत्साहन देने के लिए स्थन–स्थान पर राष्ट्रीय विद्यालय स्थापित किये जा रहे थे।

लाहौर में जब महात्मा गांधी की प्रेरणा से नेशनल कॉलेज खोला गया तो भाई जी को इसका प्रिंसिपल पद दिया गया। अमर शहीद भगतसिंह ने भी इसी कॉलेज में भाईजी से देश भक्ति का पाठ पढ़ा था। असहयोग के साथ–साथ महात्मा गांधी ने खिलाफत की तहरीक का समर्थन कर, मुसलमानों का राष्ट्रीय आन्दोलन में सहयोग लेने का प्रयास किया, किन्तु जब टर्की में कमाल पासा ने सत्ता संभाली और खिलाफत का सपना चूर–चूर हो गया, तो देश में साम्प्रदायिक दंगों की आग भड़क उठी।

उस समय मुस्लिम साम्प्रदायिकता के तूफान का मुकाबला करने के लिए, स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि तथा हिन्दू–संगठन पर बल दिया। लाला लाजपत राय तथा मदनमोहन मालवीय जैसे हिन्दू निष्ठावाले नेताओं ने "हिन्दू महासभा" को शक्तिशाली बनाने पर जोर दिया।

1931 में वे केन्द्रीय असेम्बली के लिए चुन लिये गए। 1934 में अजमेर में आयोजित हिन्दू महासभा के अधिवेशन के अध्यक्ष पद के लिए भाईजी को चुना गया। इस पद से अपना भाषण देते हुए उन्होंने देश की राजनैतिक परिस्थिति का लेखा–जोखा किया। हिन्दू महासभा को सुदृढ़ बनाने के लिए समस्त देश का भ्रमण किया। 1935 में महासभा की अध्यक्षता के लिए जब बर्मा के बौद्ध भिक्षु उत्तम को चुना गया, तो यह सिद्ध हो गया कि हिन्दू महासभा केवल उच्च वर्णों के हिन्दुओं का ही प्रतिनिधित्व नहीं करती, अपितु इसमें बौद्ध, जैन, सिख आदि उन सभी समुदायों का स्वागत है जो हिन्दू नाम को व्यापक अर्थ में स्वीकार करते हैं, तथा जिनकी आर्य संस्कृति में आस्था है।

1937 में जब वीर सावरकर को काला पानी से रिहाई मिली, तो उन्हें भी हिन्दू महासभा में आने के लिए कहा गया।

इस बीच देश की राजनैतिक स्थिति में अनेक परिवर्तन आए। अन्ततः 15 अगस्त को देश को अधूरी आजादी मिली। इस समय तक भाईजी भी शारीरिक और मानसिक दृष्टि से बहुत क्षीण और दुर्बल हो गए थे। 8 दिसम्बर 1947 को उनका निधन हो गया। उन्होंने अविभाजित भारत की स्वतन्त्रता की आशा की थी, जो सफल नहीं हुई।

मन, चिंतन और स्वाध्याय से नियंत्रित रहता है

– आचार्य कुलश्रेष्ठ

कुरवाई/मेहलुआ चौराहा निसं। जैसा खाये, अन्न वैसा बने मन, अन्न से मन बनता है, मन को नियंत्रित करने के लिए बुद्धि की पवित्रता बहुत आवश्यक है, कठोपनिषद में आया है कि मनुष्य शरीर रूपी रथ में आत्मा यात्रा कर रही है, इसमें इन्द्रियों के घोडे लगे हुए हैं, इस रथ की सारथी बुद्धि है, जो मन की लगाम में रखते हुए इस रथ का संचालन करती है, मन चिंतन और स्वाध्याय से पवित्र और नियंत्रित रहता है।

यह विचार यहां गायत्री महायज्ञ की पूर्ण आहूति के अवसर पर आगरा से पधारे वैदिक विद्वान आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ ने व्यक्त किए, इस अवसर पर वेद विदुषि सुश्री अलका आर्य दिल्ली, एवं स्वामी संगीतानन्द महाराज के उपदेश भी हुए, समापन अवसर मुख्य अतिथि पूर्व नगर परिषद अध्यक्ष गिरजेश साहू, पूर्व नगर परिषद अध्यक्ष श्रीमती रेखा जगदीश साहू, पूर्व पार्षद रमेश पहलवान एवं पूर्व पार्षद सीताराम सैनी के द्वारा वैदिक विद्वानों एवं ब्राह्मण बन्धुओं का सम्मान किया गया। गायत्री महायज्ञ की पूर्णआहूति का कार्यक्रम सिरौंज से पधारे शिवमुनि महाराज, एवं श्रीराममुनि वानप्रस्थी के सानिध्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन अधिवक्ता ओमप्रकाश आर्य के द्वारा किया गया। आभार महिला आर्य समाज की अध्यक्ष श्रीमती सरयू भावसार ने व्यक्त किया।

आचार्य कुलश्रेष्ठ ने इस अवसर पर कहा कि जब बुद्धि मलिन होती है, तो वह मन को बिगाड देती है,. ऋषि याज्ञवल्क्य कहते हैं, कि संसार में स्वाध्याय बुद्धि का श्रम है, स्वाध्याय बुद्धि को पवित्र करता है, बुद्धि वेद के ज्ञान से शुद्ध होती है, बुद्धि सात्विक होने पर मन की लगाम को पकडे रहती है, मन इन्द्रियों को नियंत्रित करता है। मन यदि बिगड गया तो पाप कर्म में प्रवृत्त करता है, मन सात्विक बनाये रखने के लिए ऋषियों ने कहा कि अधर्म की कमाई सात्विक मन खराब करती है, भ्रष्टाचार का अन्न खाने से, मन सात्विक नहीं रह पाता है, जब यह दूषित अन्न अन्दर से निकल जाता है, तब मन पुनः सात्विकता की ओर बढने लगता है, बुद्धि यदि पवित्र है तो मन पवित्र रहता है, अनियंत्रित मन जबरदस्ती पाप करवा देता है, और क्रोध उत्पन्न करता है, जितनी लडाईयां होती हैं, वह क्रोध में ही होती हैं, जितने भी वर्तमान में पाप हो रहे हैं, सब मन के क्रोधी होने से हो रहे हैं, इस मन को समझो, मन बहुत विचित्र है, स्वाध्याय नहीं करेंगें, तो बुद्धि कभी पवित्र नही रहेगी, आज जितने पाप हो रहे हैं, बुद्धि की मलिनता के कारण हो रहे हैं, मलिन बुद्धि मलिनता की ओर खींचती है।

ऋषियों के द्वारा चिंतन कर कहा कि आहार का जीवन पर बहुत प्रभाव पडता है, अण्डा तुम्हारा भोजन नही है, शराब तुम्हारा पेय नहीं है, इनसे तुम्हारी बुद्धि मलिन हो जायेगी, तो उनकी बुद्धि पवित्र कैसे होगी, बुद्धि को पवित्र बनाये रखने के लिए स्वाध्याय जरूरी है, संसार के जितने श्रम हैं, उनसे रूपया पैसा मिलता है, किंतु रूपया बुद्धि को पवित्र नहीं करता है,

जितना सरकारी अमला है, आईएएस, आईपीएस, नेता सब पढे लिखे हैं, किंतु बुद्धि मलिन होती जा रही है, खाद्ध पदार्थो में मिलावट करके विक्रय किया जा रहा है, केवल आर्य समाज का मंच आपको इसको ध्यान कराता है, कोई मंच मन और बुद्धि की पवित्रता पर विचार विमर्श नहीं करता है, बुद्धि जिसकी पवित्र होगी, पैसे का सदुपयोग करेगें, उन्होंने कहा कि कार्यक्रम के संयोजक श्रीराममुनि के परिवार की बुद्धि के पवित्र नहीं होती तो यह सद्कार्य में धन को नहीं लगाते, इनका रूपया गलत कार्यो में खर्च हो जाता, साहित्य बांट रहे हैं, यज्ञ करवा रहे हैं, बुद्धि पवित्र होने से ही यह काम हो रहे हैं, आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानंद औदीच्य ब्राह्मण परिवार में जन्मे थे, उन्होंने भारतवर्ष को पतन के मार्ग पर जाने से बचाया, ब्राह्मण वेद ज्ञान से हट गये थे, क्षत्रिय सुरा सुन्दरी में डूब गए थे, आपस की फूट के कारण विदेशी आक्रांता पराजित कर रहे थे, कई प्रकार की बुराईयां पैदा हो गंई, इतना भयंकर पतन भारत का वेद की शिक्षाओं से हटने के कारण हुआ है।

यह वीरों का देश था, ज्ञानियों का देश था, सारे भूमण्डल में भारत का राज्य था, वेद की शिक्षा का, संस्कृत की शिक्षा का साम्राज्य था, वेद ज्ञान और स्वाध्याय से हटने के कारण राजाओं में फूट पैदा हो गई, जो हिन्दू था, वह मत मतान्तरों में बट गया, महाभारत काल तक कोई और धर्म नहीं था, सृष्टि के आरम्भ में जब परमात्मा ने वेद ज्ञान दिया, उसके पश्चात् महाभारत काल तक कोई अन्य मत मतान्तर संसार में उत्पन्न नहीं हुए थे, तब सब आर्यावर्त के अर्न्तगत वैदिक धर्म के अनुयायी थे, भूमण्डल में आर्यो का राज था, अगर हमारा समाज वैदिक ज्ञान से नहीं हटता तो अन्य मत मतान्तर पैदा नहीं हुए होते, हमारे समाज में आई विकृति के कारण सती प्रथा में स्त्रियों को जिन्दा जला देते थे, देवी देवताओं के नाम पर बलि प्रथा चल रही थी, समाज में आई कुरीतियों और लोगों की मानसिकता को बदलना कोई साधारण कार्य नहीं होता है।

आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानंद के आने से वैदिक संस्कृति की पुर्नस्थापना हुई, समाज में व्याप्त बुराईयां, कुरीतियां, व अंध विश्वास के विरूद्ध आर्य सन्यासियों ने संघर्ष किया, धर्म से विधर्मी हुए लोगों को शुद्ध कर घर वापसी का अभियान आर्य समाज ने चलाया, आर्य सन्यासी स्वामी श्रद्धानंद सरस्वति ने हरिद्वार में गुरूकुल कांगडी विश्व विद्यालय स्थापित कर अंग्रेजी सरकार के समय देश में स्वदेशी राज्य का नारा बुलन्द किया, आर्य समाज मानव मात्र की रक्षा के लिए कार्य कर रहा है, जो ज्ञान विज्ञान वेद में है, वह भारत को फिर से विश्व गुरू बनाने बाला है, वेद कहता है कि पुरूषार्थ से कमाये धन का शतांष दान किया करो, सुख का सम्बन्ध दान से है, परमात्मा घोषणा करता है कि दानशील मनुष्यों पर कृपा की वर्षा करता रहता हूँ, दीनियों की जो सेवा करते हैं, उन पर परामत्मा कृपा करते हैं. समापन अवसर पर मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान पं. दिनेश वाजपेई विदिशा, भगवतदत्त जिज्ञासु गंजबासौदा, पं.ओमप्रकाश दीक्षित, गौरक्षा आन्दोलनकारी लक्ष्मण नामदेव मेहलुआ, वेदकुमार दीक्षित, सहित क्षेत्र के पूजापाठी ब्राह्मण बन्धुओं का सम्मान किया गया।

समाचार

आर्य समाज इन्दौर का 132 वॉ स्थापना दिवस एवं वार्षिकोत्सव सम्पन्न

वर्षों पश्चात इन्दौर नगर में एक बहुत ही सार्थक, भव्य और गरिमामयी कार्यक्रम का आयोजन आर्य समाज मल्हारगंज में किया गया। यह कार्यक्रम आर्य समाज मल्हारगंज के 132 वें स्थापना दिवस के उपलक्ष में दिनांक 17 से 19 जनवरी तक मनाया गया।

कार्यक्रम में नगर के आर्यजनों के अतिरिक्त बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति होती रही। प्रातःकाल यज्ञब्रह्मा आचार्य चन्द्रमणिजी द्वारा यज्ञ, भजन और उसके पश्चात आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री, आगरा निवासी के बहुत ही प्रभावपूर्ण व्याख्यान और आध्यात्मिक प्रवचन हुए। तीनों दिन आचार्य जी को सुनने के लिए बड़ी संख्या में उपस्थिति होती रही और सभी ने इस कार्यक्रम की बहुत सराहना की।

अन्तिम दिन महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया था, जिसकी अध्यक्षता विधायिका सुश्री ऊषाजी ठाकुर ने की और 13 महिला वक्ताओं ने इसमें भाग लिया। कार्यक्रम में नगर के प्रतिष्ठित गणमान्य नागरिक व विधायक, राजनेता, विश्व हिन्दू परिसद के कार्यकर्ता, सनातन धर्म के अधिकारी आदि उपस्थित रहे।

सार्वदेशिक सभामन्त्री श्री प्रकाश जी आर्य, श्री गोविन्द आर्य तथा नगर की सभी आर्य समाजों के मन्त्री, प्रधान एवं सदस्य उपस्थित रहें।

कार्यक्रम की उपस्थिति और उसका प्रभाव देखते हुए आर्यजनों में एक उत्साह था। इस कारण दिनांक 24, 25 एवं 26 अप्रेल को स्थानीय दयानन्दगंज में आर्य समाज का कार्यक्रम आयोजित करने की घोषणा की गई।

कार्यक्रम में प्रान्तीय सभा के संगीतकार, गायक नीरज शर्मा, भजनोपदेशक यादवेन्द्र शास्त्री, विनोद आर्य, दिलिप आर्य सहित संजय आर्य के भजनों को बहुत सराहा गया।

कार्यक्रम का संयोजन एवं मल्हारगंज आर्य समाज के प्रधान श्री दक्षदेव गौड़, मन्त्री श्री विनोद अहलुवालिया द्वारा किया गया। श्री दिनेश गुप्ता, श्री रमेशचन्द्र चौहान, श्री रामेश्वर त्रिवेदी, सहायक श्री दिनेश श्रीवास्तव, अजय रैनीवाल, चैनसिंह, श्रीमती शशि गुप्ता, श्रीमती गीता अहलुवालिया, श्रीमती विमला गौड़, श्रीमती मनोरमा आर्य का विशेष सहयोग रहा।

आर्य समाज नान्द्रा में 5 दिवसीय कार्यक्रम सम्पन्न

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी आर्य समाज नान्द्रा में 5 दिवसीय कार्यक्रम दिनांक 1 जनवरी से 5 जनवरी 2020 तक आयोजन किया गया। कार्यक्रम आर्य समाज द्वारा निर्मित विशाल भवन में आयोजित था।

इस अवसर पर निमाड़ जिले की आर्य समाजों से अनेक आर्यजन उपस्थित हुए। कार्यक्रम में यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में स्वामी श्री विश्वानन्दजी सरस्वती, भजनोपदेशिका श्रीमती अलका जी आर्या, दिल्ली, भजनोपदेशक श्री काशीराम जी अनल, कानड से पधारे थे।

कार्यक्रम के समापन के अवसर पर श्री प्रकाशजी आर्य (मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली), महू आए थे।

कार्यक्रम का संचालन, विशेष व्यवस्था एवं सहयोग एवं आभार श्री डालूराम आर्य द्वारा किया गया।

आर्य समाज पिपलानी में 23 से 25 दिस. तक भव्य आयोजन सम्पन्न

आर्य समाज पिपलानी में एक भव्य एवं सुन्दर नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन सार्वदेशिक सभा प्रधान माननीय श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य के कर कमलों द्वारा किया गया। नगर की एक सुन्दर भव्य यज्ञशाला सभी को आकर्षित कर रही थी।

ध्वजारोहण करते श्री सुरेशचन्द्र आर्य (प्रधान–सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली)

इस अवसर पर 3 दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इसमें आचार्य श्री सोमदेवजी और भजनोपदेशक योगेशदत्तज़ी शास्त्री के द्वारा अत्यन्त प्रभावी, मार्मिक उपदेश दिए गए। नगर की अन्य आर्य समाजों से भी मन्त्री, प्रधान व अन्य सदस्यगण उपस्थित होते रहे।

श्री सुरेशचन्द्र आर्य सम्बोधित करते हुए

इस अवसर पर सभामन्त्री श्री प्रकाशजी आर्य, श्री दलवीरसिंहजी राघव, श्री वेदप्रकाशजी शर्मा, स्वामी ऋतस्पतिजी, श्री दिनेश वाजपेयी, श्रीमती राकेशजी शर्मा, श्रीमती पुष्पांजलि जी शर्मा आदि अनेक आर्यजन उपस्थित रहे।

आर्य समाज दिलावरा में 3 दिवसीय कार्यक्रम सम्पन्न

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी आर्य समाज दिलावरा में 3 दिवसीय कार्यक्रम दिनांक 6 जनवरी से 8 जनवरी 2020 तक आयोजन किया गया।

इस अवसर पर अनेक आर्यजन उपस्थित हुए। कार्यक्रम में यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में स्वामी श्री विश्वानन्दजी सरस्वती, स्वामी सूर्यदेवजी, भजनोपदेशिका श्रीमती अलका जी आर्या, दिल्ली से पधारे थे।

कार्यक्रम का संचालन, विशेष व्यवस्था एवं आभार श्री लाखनसिंह आर्य द्वारा किया गया।

प्रदेश का भव्य आयोजन गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

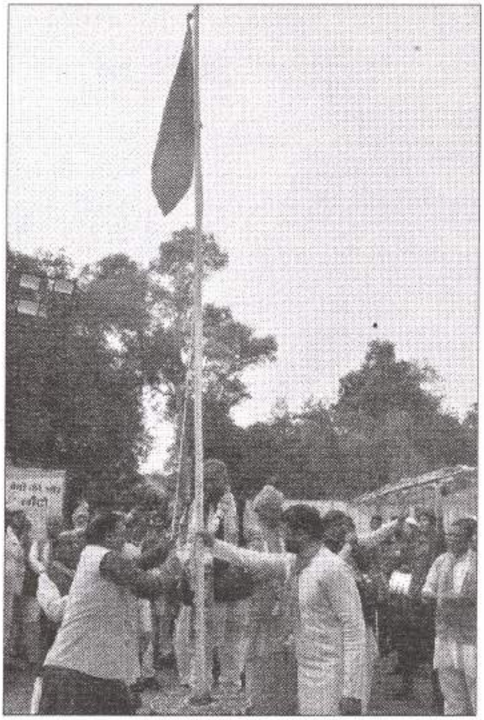

वर्ष 2001 से निरन्तर प्रति दो वर्ष में 7 दिवसीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन हो रहा है। इस बार दिनांक 25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर तक पुनः यह आयोजन सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम की विशेषता यह रहती है कि इसमें आर्य समाज से संबंधित आर्य जनों के अतिरिक्त अन्य सनातनधर्मी पौराणिक जनों की उपस्थिति बड़ी संख्या में होती है।

ध्वजारोहण करते श्री सुरेशचन्द्र आर्य (प्रधान–सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली)

यज्ञशाला में यजमान प्रवचन श्रवण करते हुए

वेदकथा श्रवण करते श्रद्धालू

इसका लाभ भी होता है यज्ञ के सही स्वरूप को देखने, सुनने का प्रभाव भी होता हैं वहीं अन्य कार्यक्रमों से प्रभावित अनेक नये व्यक्ति वैदिक विचारधारा से परिचित होते हैं और आर्य समाज के साथ जुड़ जाते हैं।

पाणिनी कन्या विद्यालय की ब्रह्मचारिणियाँ भजन सन्ध्या में प्रस्तुति करते हुए

शोभायात्रा में प्रदर्शन

लगभग 5–6 बीघा भूमि पर कार्यक्रम का आयोजन होता है। कार्यक्रम स्थल पर भव्य यज्ञशाला जिसमें 11 यज्ञवेदी बनी होती है। जिसमें प्राचीन छटा दिखाई देती है, बहुत ही आकर्षक सुसज्जित, भूमि से 5 फुट उँची 50 बाय 50 फुट में सैकड़ों बॉस बल्ली से निर्मित की गई थी। मुख्य पाण्ड़ाल जहाँ से प्रवचन, भजन, वेदकथा, व्याख्यानमला और लघुनाटिका, प्रदर्शन आदि आयोजित किए जाते हैं वह अत्यत्न भव्य आकर्षक और विशाल बना था। जिसमें 5000 व्यक्तियों के बैठने की व्यवस्था रहती है।

महापुरूषों के चित्रों से वैदिक सिद्धान्तों को प्रदर्शित करने वाली प्रदर्शनी बनाई गई जिसे देखने वाले उसका फोटो निकालते देखे जाते।

आर्ष साहित्य सामग्र व औषधि आदि के विक्रय हेतु 15 दुकानों का निर्माण किया गया था।

इसके पश्चात आर्य वीर दल कानड़ आगर के सैकड़ों आर्यवीर व्यायाम का, शस्त्र चालन का प्रदर्शन करते हुए चल रहे थे। विशेष आकर्षण का दृश्य था रस्सी मलखम जिसके लिए क्रेन का उपयोग हुआ, जिससे 30 फुट उँची रस्सी बान्धी गई थी। यह हजारों व्यक्तियों के लिए नया दृश्य था।

शोभायात्रा में एक बघ्घी पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य एवं स्वामी पूर्णानन्द जी, दूसरी बघ्घी पर न्यायमूर्ति वीरेन्द्रदत्त ज्ञानी और आचार्य योगेन्द्र शास्त्री बैठे थे। इसके पीछे सैकड़ों की संख्या में स्त्री, पुरूष पैदल चल रहे थे। पीछे–पीछे चार पहिया वाहन चल रहे थे।

शोभायात्रा का नगर में 50 से अधिक स्थानों पर पुष्प वर्षा एवं मालाओं से स्वागत हुआ। हजारों की संख्या वाली यह शोभायात्रा एक ऐतिहासिक बन गई थी।

शोभायात्रा में व्यायाम प्रदर्शन करते आर्य वीर

भोजनशाला – 3 से 4 हजार व्यक्तियों ने प्रतिदिन प्रसाद ग्रहण किया।

प्रतिदिन के कार्यक्रम – आसन – प्राणायाम – योग शिविर प्रातः 6.30 से 7.30 तक, यज्ञ–भजन–प्रवचन प्रातः 8 से 12 बजे तक, वेदकथा दोपहर 2 से 4.30 तक, व्याख्यानमाला सायंकाल 7.30 से 9.30 तक, नारी जागृति सम्मेलन एवं भजन सन्ध्या।

आमन्त्रित विद्वान थे – श्री सुरेशचन्द्र आर्य (प्रधान–सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली), डॉ. वेदपालजी – (प्रधान – परोपकारिणी सभा अजमेर), डॉ. योगेन्द्रजी शास्त्री–होशंगाबाद, स्वामी सुमेधानन्दजी सांसद सीकर राजस्थान, स्वामी सम्पूर्णानन्दजी–हरियाणा, आचार्य वागीश शर्मा–एटा उ.प्र., डॉ. प्रीति विमर्शिणी एवं गुरूकुल पाणिनी कन्या महाविद्यालय बनारस की कन्याएँ, डॉ. गायत्रीजी–दिल्ली, आचार्य दयासागरजी, भजनोपदेशक मोहित आर्य, आचार्य चन्द्रमणिजी, श्री पं. रामलाल शास्त्री, श्री सुरेशचन्द्र शास्त्री, विशिष्ठ अतिथि – सुश्री ऊषाजी ठाकुर – विधायिका, महू प्रान्त के सभी जिलों से तो व्यक्ति आए ही दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, महाराष्ट्र, झारखण्ड, हरियाणा से भी अनेक श्रद्धालु इस आयोजन में पधारे थे। सबके ठहरने के लिए नगर की सभी धर्मशाला व कक्ष आरक्षित कर लिए गए थे।

विशेष सहयोग – आर्य समाज, इन्दौर, आर्य समाज, राऊ

कार्यक्रम में सर्वश्री आर्य राधेश्याम बियाणी, श्रीधर गोस्वामी, आर्य रामलाल प्रजापति, आर्य अश्विनी शर्मा व स्वागताध्यक्ष कैलाश अग्रवाल, रवि आर्य, ओमप्रकाश आर्य, धूलचन्द पाटीदार, रमेश अग्रवाल, राजेश नेनावा, ओमजी आर्य, डॉ. चन्द्रप्रकाश निगम, सुश्री निधि शर्मा, सुश्री सुनीति शर्मा, मीना वर्मा, श्रीमती मधु जोशी, द्रोणाचार्य दुबे, भागीरथ प्रजापति, कमल धानुक, मोहन आर्य, विनोद आर्य, सुरेश आर्य, आदि का सहयोग प्रतिदिन मिलता रहा।

महर्षि दयानन्द आर्ष कन्या गुरुकुल

ग्राम मोहन बड़ोदिया

प्रथम सम्मेलन दिनांक 10, 11, 12 अप्रेल 2020

कृपया प्रत्येक आर्यजन अवश्य पधारें।

आगामी सत्र हेतु प्रवेश प्रारंभ - 10 अप्रेल से 10 मई तक 2020

अंतरंग सभा बैठक

मान्यवर,

सभा प्रधान श्री इन्द्र प्रकाश जी गांधी के आदेशानुसार मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की साधारण सभा बैठक दिनांक 23-02-2020 रविवार को प्रातः 11 बजे आर्य समाज मंदिर, नई सड़क उज्जैन में आहूत की गई है। सभी पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्य एवं विशेष आमंत्रित सदस्य अवश्य पधारें।

।। ओ३म्।।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द आर्ष कन्या गुरुकुल

ग्राम मोहन बड़ोदिया, जिला शाजापुर (म.प्र.)

प्रवेश प्रारंभ

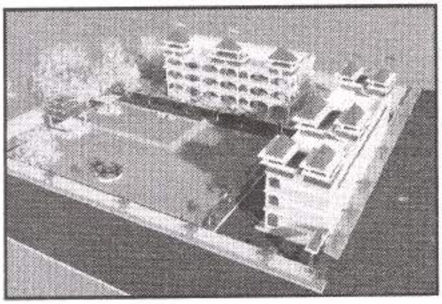

महर्षि दयानन्द आर्ष कन्या गुरुकुल नवनिर्मित सुविधायुक्त भव्य भवन में गुरुकुल की स्थापना विगत वर्ष 2019 में होकर पठन–पाठन कार्य प्रारंभ हो चुका है। नए सत्र हेतु गुरुकुल में दिनांक 10 अप्रेल से 10 मई 2020 तक प्रवेश प्रारंभ रहेगा।

यह गुरुकुल पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी के मार्गदर्शन व सहयोग से संचालित किया जा रहा है। छात्राओं के रहने की, भोजन, प्रातःराश आदि की सुव्यवस्था उपलब्ध रहेगी। गुरुकुलीय आर्ष शिक्षा पद्धति के अनुसार छात्राओं को सत्य सनातन वैदिक धर्म अनुसार संस्कारित करना, इस संस्था का मुख्य उद्देश्य है। पढ़ाई के अतिरिक्त दैनिक गतिविधियों में आसन, प्राणायाम, व्यायाम, संध्या, प्रार्थना, संगीत, शस्त्र चालन आदि सम्मिलित है।

गुरुकुलीय पद्धति की शिक्षा के अतिरिक्त मध्य प्रदेश शिक्षा मण्डल भोपाल द्वारा मान्य शिक्षा हेतु कक्षा 6 से 8 तक की पढ़ाई साथ ही कम्प्यूटर शिक्षा की व्यवस्था भी है।

गुरुकुल में कक्षा 6 से 8 तक की छात्राओं को प्रवेश दिया जावेगा।

इच्छुक अभिभावक गुरुकुल कार्यालय से कार्यालय समय प्रातः 11 से 5 तक प्रवेश पत्र प्राप्त कर सकते हैं, स्थान सीमित है।

छात्रा को साक्षात्कार में योग्यता होने पर ही प्रवेश दिया जा सकेगा।

प्रकाश आर्य
सचिव
मो. 9826655117
6261186451

आचार्या प्रज्ञा
मो. 6267468984

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

॥ ओ३म् ॥

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर को मानने से पहले उसे जानना आवश्यक है. ईश्वर वही है जो-सच्चिदानन्दस्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य

...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं है, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान हैं, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

आर्य समाज

मानव कल्याणार्थ

※ आर्य समाज के दस नियम ※

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2018-20

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा
तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा कौशल प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक – **प्रकाश आर्य, महू**

AMIT CHATURVEDI # 98262-71062